ISSN 2277-5897 SABLOG
PEER REVIEWED JOURNAL

153

लोक चेतना का राष्ट्रीय मासिक

सबलोग

नवम्बर 2026 • ₹ 50

बचपन की खोज

- यूपीएससी का शताब्दी वर्ष
- लोकप्रियता, प्रलोभन और सीजेपी
- नटसम्राट नाना पाटेकर



सबलोग-153

वर्ष 17, अंक 11, नवम्बर 2026

ISSN 2277-5897 SABLOG
PEER REVIEWED JOURNAL
www.sablog.in

सम्पादक
किशन कालजयी

संयुक्त सम्पादक
प्रकाश देवकुलिश
राजन अग्रवाल

उप-सम्पादक
गुलशन चौधरी

समीक्षा समिति
(Peer Review Committee)
आनन्द कुमार
रत्नेश्वर मिश्र
मणीन्द्र नाथ ठाकुर
मंजु रानी सिंह
सफदर इमाम कादरी
प्रमोद मीणा
राजेन्द्र रवि
मधुरेश
महादेव टोप्पो
विजय कुमार
आशा
सन्तोष कुमार शुक्ल
अखलाक 'आहन'
अभय सागर मिंज

सम्पादकीय सम्पर्क
बी-3/44, तीसरा तल, सेक्टर-16,
रोहिणी, दिल्ली-110089
+918340436365
sablogmonthly@gmail.com

सदस्यता शुल्क
एक अंक : 50 रुपये
वार्षिक : 1100 रुपये रजिस्टर्ड डाक से

सबलोग
खाता संख्या-49480200000045
बैंक ऑफ बड़ौदा,
शाखा-बादली, दिल्ली
IFSC-BARB0TRDBAD
(Fifth Character is Zero)

स्वामी, सम्पादक, प्रकाशक व मुद्रक किशन कालजयी द्वारा बी-3/44, सेक्टर-16, रोहिणी, दिल्ली-110089 से प्रकाशित और लक्ष्मी प्रिण्टर्स, 556 जी.टी. रोड शाहदरा दिल्ली-110032 से मुद्रित।

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों में व्यक्त विचार लेखकों के हैं, उनसे सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं।

पत्रिका अव्यावसायिक और सभी पद अवैतनिक।
पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी विवाद के लिए न्यायक्षेत्र दिल्ली।

संवेद फाउण्डेशन का मासिक प्रकाशन

बचपन की खोज

मुनादी / बचपन केवल बड़े होने की तैयारी नहीं : **किशन कालजयी** 3
बच्चे और हमारा समय : **पल्लव** 5
बढ़ता स्क्रीन टाइम बनाम व्यक्तित्व विकास : **महेश चन्द्र पुनेठा** 7
बदलती तकनीक, बदलता बचपन : **योगेन्द्र** 9
बच्चों को उपभोक्ता बनाता बाजार : **प्रीति प्रकाश** 11
बाल मनोविज्ञान और सामाजिक संरचना : **देवेन्द्र के. प्रजापति** 13
गरीब, वंचित और बचपन : **माया मिश्र** 15
बचपन भविष्य की परियोजना नहीं : **आनन्द कुमार राय** 17
नयी सम्भावनाएँ और बचपन की चुनौतियाँ : **दीक्षा गुप्ता** 19

सृजनलोक

दस कविताएँ : **सुनील कुमार,** टिप्पणी : **आशुतोष पार्थेश्वर,** रेखांकन : **नूपुर अशोक** 21

देश

झारखण्ड / खनिज हमारा फैसला तुम्हारा : **सुधीर पाल** 23
हरियाणा / सवालों का सामना करते अग्निवीर : **अजय सिंह** 25
दिल्ली/ जन्तर-मन्तर से दूर होते प्रतिरोध के ठिकाने : **महेन्द्र तिवारी** 27

स्तम्भ

तीसरी घण्टी / बदलते दौर में बदलता रंगमंच : **राजेश कुमार** 28
यत्र-तत्र / कहानी के आधुनिक ढाँचे की तलाश में : **जय प्रकाश** 31
देशान्तर / फिलिस्तीनियों का संघर्ष : **धीरंजन मालवे** 34
परती परिकथा / इतिहास पर किसी का स्वामित्व नहीं : **हितेन्द्र पटेल** 37

विविध

लोकतन्त्र / संवैधानिक नैतिकता की प्रासंगिकता : **आलोक टण्डन** 40
न्यायक्षेत्रे / स्वतन्त्रता, संविधान और सत्ता : **राकेश कुमार गुप्त** 42
प्रासंगिक / यूपीएससी का शताब्दी वर्ष : **प्रेमपाल शर्मा** 44
राजनीति / लोकप्रियता, प्रलोभन और सीजेपी : **आशीष कोठारी** 46
जन-गण-मन / जनतान्त्रिक संस्थाओं का बर्बादीकरण : **सर्वेश कुमार मौर्य** 48
स्त्रीकाल / महिला चेतना और पारिवारिक परिदृश्य : **आकांक्षा** 51
संस्मरण / शान्तिनिकेतन के बहाने : **राजीव रंजन प्रसाद** 53
सिनेमा / नटसम्राट नाना पाटेकर : **रक्षा गीता** 55
किताब / कविता में आन्दोलन की आँच : **कर्मेन्दु शिशिर** 57
लिये लुकाठी हाथ / सूखे की चिन्ता में गीले कण्ठ : **गिरीश पंकज** 58
रंगसाज / लोक और संस्कृति की चित्रभाषा : **मनोज कुमार कपरदार** 59
कटाक्ष : **राजेन्द्र धोड़पकर** 60

आवरण : शशिकान्त सिंह

अक्षर संयोजन : आशीष कुमार पाठक

अगला अंक : इतिहास, सत्ता और राजनीति

बचपन केवल बड़े होने की तैयारी नहीं



प्रिय अव्यान,

आज तुम्हारा जन्मदिन है और मैं तुम्हारे पास नहीं हूँ। मैं जब तुम्हारे पास नहीं होता हूँ तब तुम मेरे पास सबसे अधिक होते हो। तुम अभी इतने बड़े नहीं हुए हो कि इस पत्र में लिखी बातें समझ सको। लेकिन मुझे विश्वास है कि जब तुम पढ़ने-समझने लायक हो जाओगे, तब शायद ये बातें तुम्हारे लिए और तुम्हारी पीढ़ी के तमाम बच्चों के लिए अर्थपूर्ण होंगी। तब भी एक सवाल तुम्हारे सामने होगा, जो आज मेरे सामने है–तुम्हारा बचपन कहाँ है?

यह सवाल तुम्हें अजीब लग सकता है। तुम्हारे पास घर है, स्कूल है, किताबें हैं, खिलौने हैं। तुम्हारे माता-पिता तुम्हारे भविष्य के लिए दिन-रात मेहनत करते हैं। वे चाहते हैं कि तुम खूब पढ़ो, अच्छे अंक लाओ, जीवन में सफल बनो और वह सब हासिल करो जो शायद वे स्वयं नहीं कर सके। उनकी इन इच्छाओं में तुम्हारे प्रति प्यार है, तुम्हारी चिन्ता है और तुम्हारे बेहतर जीवन का सपना भी। तुम्हारे भविष्य की इतनी चिन्ता के बीच तुम्हारे वर्तमान की चिन्ता कौन कर रहा है? क्या तुम्हारे पास अपने लिए भी कुछ समय है? क्या तुम कभी बिना किसी वजह के खिलखिलाकर हँसते हो? क्या बारिश में भीगने, मिट्टी में खेलने, पेड़ों को निहारने, दोस्तों के साथ शरारत करने और छोटी-छोटी बातों पर रूठने-मनाने का मौका मिलता है? क्या तुम्हें कभी ऐसा कुछ करने की छूट मिलती है, जिससे कोई इनाम न मिले, जिसका कोई उपयोग साबित न करना पड़े और जिसे तुम्हारी सफलता से जोड़कर न देखा जाए? मुझे डर है कि तुम्हारे बड़े होते जाने के साथ कहीं तुम्हारा बचपन छोटा तो नहीं होता जा रहा है।

बड़ों की दुनिया में तुम्हारे भविष्य की एक लम्बी योजना तैयार है। तुम्हें क्या बनना है, किस स्कूल में पढ़ना है, कितने अंक लाने हैं, किस प्रतियोगिता में सफल होना है और किस उम्र तक क्या हासिल कर लेना है–इन सबकी चिन्ता पहले से की जा रही है। तुमसे प्यार करने वाले लोग ही कई बार तुम्हारी जिन्दगी के सबसे बड़े निर्णायक बन जाते हैं। वे तुम्हारी भलाई चाहते हैं, इसलिए तुम्हारे लिए फैसले करते हैं।

अव्यान, तुम्हारे माता-पिता तुमसे प्यार करते हैं, इसका अर्थ यह नहीं कि तुम्हारी जिन्दगी पर केवल उन्हीं का अधिकार है। उनकी तरह तुम्हारी भी अपनी रुचियाँ, जिज्ञासाएँ और कल्पनाएँ हैं। जरूरी नहीं कि तुम्हें वही बनना अच्छा लगे जो वे चाहते हैं। यह भी जरूरी नहीं कि तुम्हारी सफलता का रास्ता वही हो, जिस पर सब चल रहे हैं। तुम्हें अपनी राह खोजने का अवसर मिलना चाहिए। गलतियाँ करने, उनसे सीखने और कभी-कभी असफल होने का अधिकार भी मिलना चाहिए। आखिर कोशिश किये बिना तुम कैसे जानोगे कि तुम्हें क्या अच्छा लगता है और तुम क्या कर सकते हो?

तुम्हारी जिन्दगी कोई ऐसी परीक्षा नहीं है, जिसका परिणाम पहले से तय हो और जिसमें हर हाल में सबसे आगे निकलना जरूरी हो। मौजूदा समय में बचपन को लेकर सबसे बड़ी विडम्बना यही है कि हम बच्चों के लिए सब कुछ करना चाहते हैं, लेकिन कई बार उनसे यह पूछना भूल जाते हैं कि वे क्या चाहते हैं। हम उन्हें अच्छा भविष्य देना चाहते हैं, पर इस प्रक्रिया में उनका वर्तमान छीन लेते हैं। उन्हें सफल बनाने की जल्दी में हम यह भूल जाते हैं कि बचपन केवल बड़े होने की तैयारी नहीं, अपने आप में जीवन का एक महत्त्वपूर्ण दौर है।

मैं चाहता हूँ कि तुम्हें अच्छी शिक्षा मिले। तुम खूब पढ़ो, मेहनत करो और अपनी क्षमताओं को पहचानो। लेकिन इसके लिए तुम्हें जीने का समय भी मिलना चाहिए। तुम्हारी किताबों में केवल प्रश्नों के उत्तर न हों, तुम्हारे मन में नये प्रश्न पैदा करने की जगह भी हो। तुम्हारे स्कूल में परीक्षा की तैयारी हो, लेकिन जीवन को समझने की तैयारी भी हो।

तुम्हारी दुनिया में मोबाइल और इण्टरनेट भी हैं। इनके सहारे तुम दूर-दूर की दुनिया देख सकते हो, नयी बातें सीख सकते हो और अपनी कल्पना को नये रास्ते दे सकते हो। मैं नहीं चाहता कि तुम तकनीक से दूर रहो। मैं चाहता हूँ कि तकनीक तुम्हारी मददगार बने, तुम्हारी सोच की जगह न ले। हर सवाल का तैयार जवाब मिल जाना सुविधाजनक है, लेकिन कभी-कभी जवाब खोजने की यात्रा भी जरूरी होती है।

लेकिन मोबाइल के लिए तुम्हें ही दोष देना ठीक नहीं होगा। जरा सोचो, तुम्हारे आसपास खेलने के लिए कितने मैदान हैं? क्या तुम सड़क पर बिना डर के साइकिल चला सकते हो? क्या तुम्हारे मोहल्ले में ऐसी जगह है, जहाँ तुम दोस्तों के साथ बैठकर बातें कर सको? घर में तुम्हारे भाई-बहन भी हैं या तुम अकेले हो? दरअसल यह दौर ही ऐसा है जब यह अकेलापन बाहर भी काटता है। जब बाहर की दुनिया बच्चों के लिए छोटी और असुरक्षित होती जाती है, तो वे अपनी जगह मोबाइल की दुनिया में ही खोजते हैं। इसलिए बड़ों को बच्चों को मोबाइल से दूर रहने की सलाह देने से पहले उनके लिए एक खुली, सुरक्षित और जीवन्त दुनिया भी बनानी होगी।

अव्यान, तुम्हें यह भी जानना चाहिए कि हर बच्चे का बचपन एक जैसा नहीं होता। कुछ बच्चों के पास अच्छे स्कूल, महँगे खिलौने और हर तरह की सुविधाएँ हैं, फिर भी वे समय और अपनेपन के लिए तरसते हैं। दूसरी ओर, बहुत-से बच्चे ऐसे हैं जिनके पास खेलने के लिए खिलौने तो दूर, भरपेट भोजन और स्कूल जाने का अवसर भी नहीं है। कई बच्चे कम उम्र में काम करने लगते हैं। कई परिवार की जिम्मेदारियों के कारण पढ़ाई छोड़ देते हैं। बहुत-सी लड़कियाँ घर के काम और छोटे भाई-बहनों की देखभाल में अपना समय बिताती हैं। गरीबी, जातिगत भेदभाव और सामाजिक असमानता भी बच्चों के अवसर छीन लेते हैं। इसलिए बचपन का सवाल केवल तुम्हारे स्कूल, मोबाइल और परीक्षा तक सीमित नहीं है। यह इस बात से भी जुड़ा है कि हमारा समाज हर बच्चे को बराबर मानता है या नहीं? क्या हर बच्चे को अच्छी शिक्षा, पोषण, सुरक्षा और सम्मान मिलता है? क्या हर बच्चे को अपनी क्षमता विकसित करने का अवसर मिलता है? जब एक बच्चा महँगी कोचिंग में भविष्य बनाने की कोशिश कर रहा हो और दूसरा पेट भरने के लिए काम कर रहा हो, तब केवल मेहनत और प्रतिभा की बात करना काफी नहीं है। हमें उन परिस्थितियों को भी बदलना होगा जो बच्चों के अवसरों में इतना बड़ा फर्क पैदा करती हैं।